जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

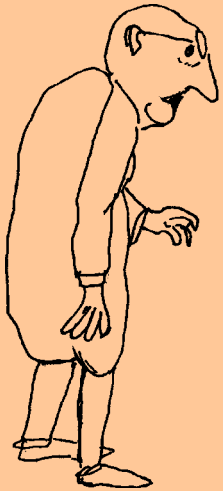

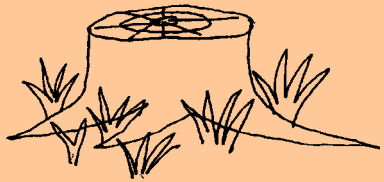

पेड़ों की महिमा बखान करती सुंदर कहानी। पेड़ हमें क्या-क्या नहीं देते - फल, छांव, घर, नाव, ऑक्सीजन आदि। परंतु हम उनसे केवल लेते ही हैं। बदले में उन्हें केवल काटते हैं और जलाते हैं। पेड़ों के महत्व और उनकी दयालु प्रकृति को उजागर करने वाली सदाबहार कहानी। एक ऐसी कहानी जो हर उम्र के इंसान को पसंद आएगी।

A green classic. Trees give us fruit, shade, wooden houses, boats, oxygen and what not. In return, we just chop and burn them. This story recounts the eternal kindness of trees.

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये B - 2 Price: 15 Rupees

दानी पेड़

The Giving Tree

शेल सिल्वरस्टाइन
Shel Silverstien

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

दानी पेड़ *: The Giving Tree*
शेल सिल्वरस्टाइन *: Shel Silverstien*
प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन : दुलारी
(शेल सिल्वरस्टाइन के मूल चित्रों पर आधारित)
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

सातवां संस्करण : वर्ष 2007

Price : 15 Rupees
मूल्य: 15 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in,
bgvsdelhi@gmail.com

दानी पेड़

The Giving Tree

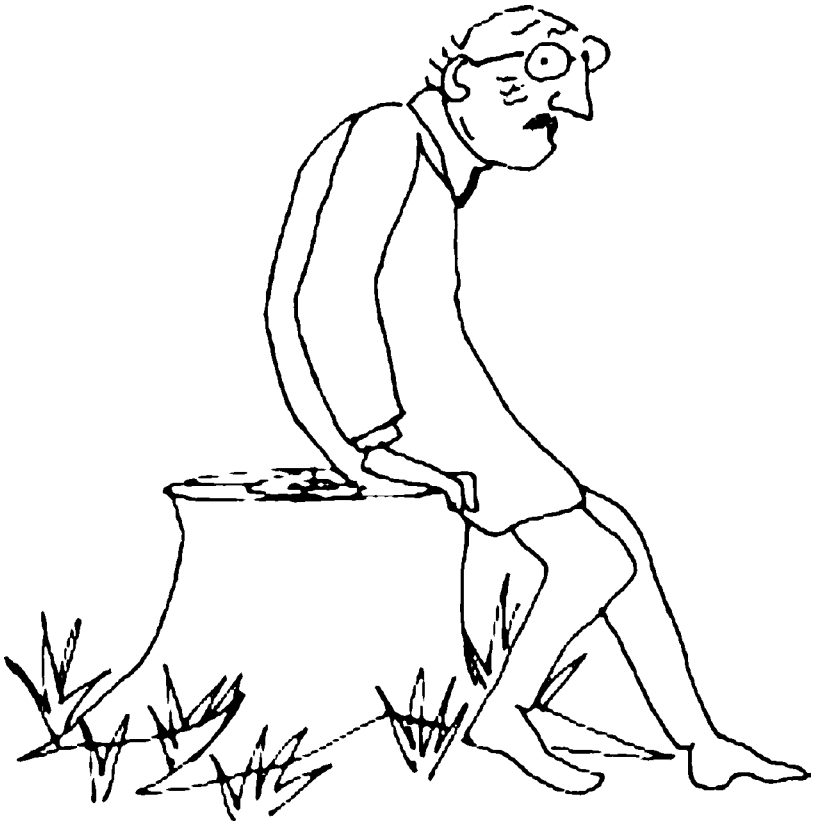

दानी पेड़

The Giving Tree

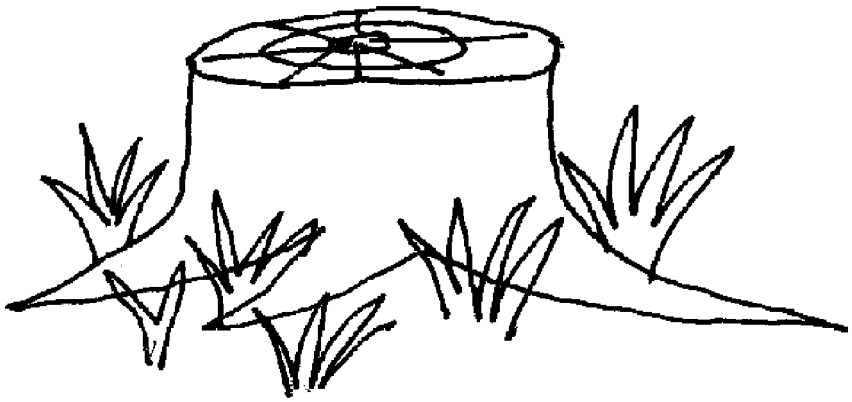

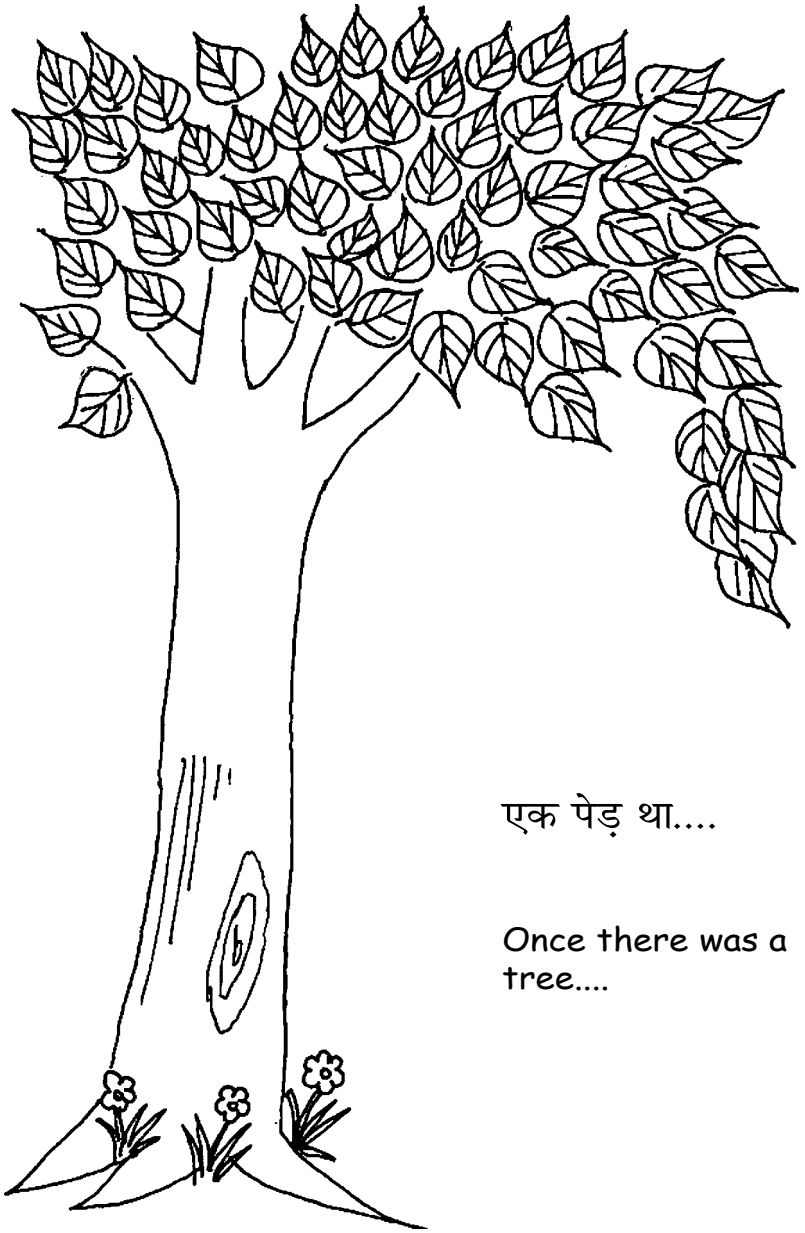

एक पेड़ था....

Once there was a tree....

वह एक छोटे लड़के
को बहुत प्यार करता था।

and she loved
a little boy.

हर रोज़ लड़का उसके
पास आता ...

And everyday the boy
would come ...

... और पेड़ के पत्ते
इकट्ठे करता था।

... and he would gather
the leaves

वह पेड़ के फूल इकट्ठे करके
उनकी माला बनाता था।

and make them
into a crown.

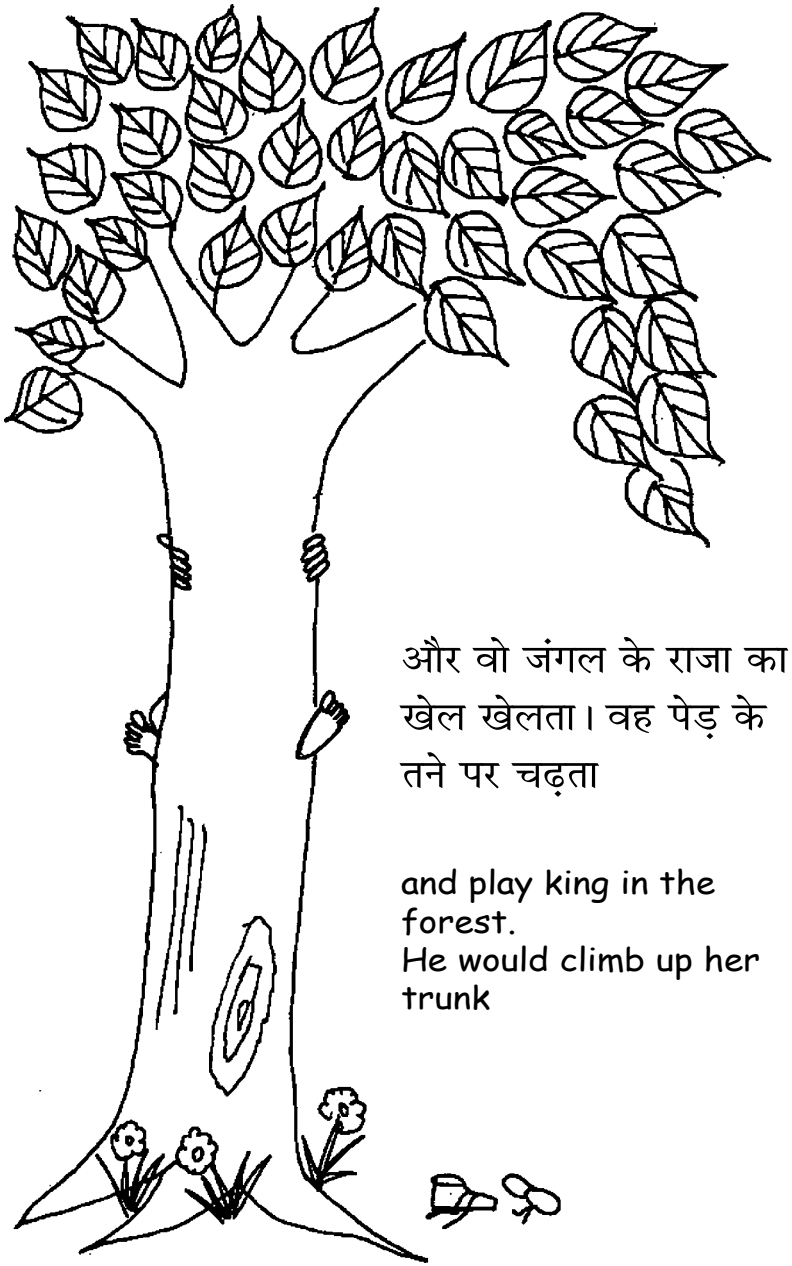

और वो जंगल के राजा का
खेल खेलता। वह पेड़ के
तने पर चढ़ता

and play king in the
forest.
He would climb up her
trunk

और उसकी शाखों से झूलता।

and swing from her branches

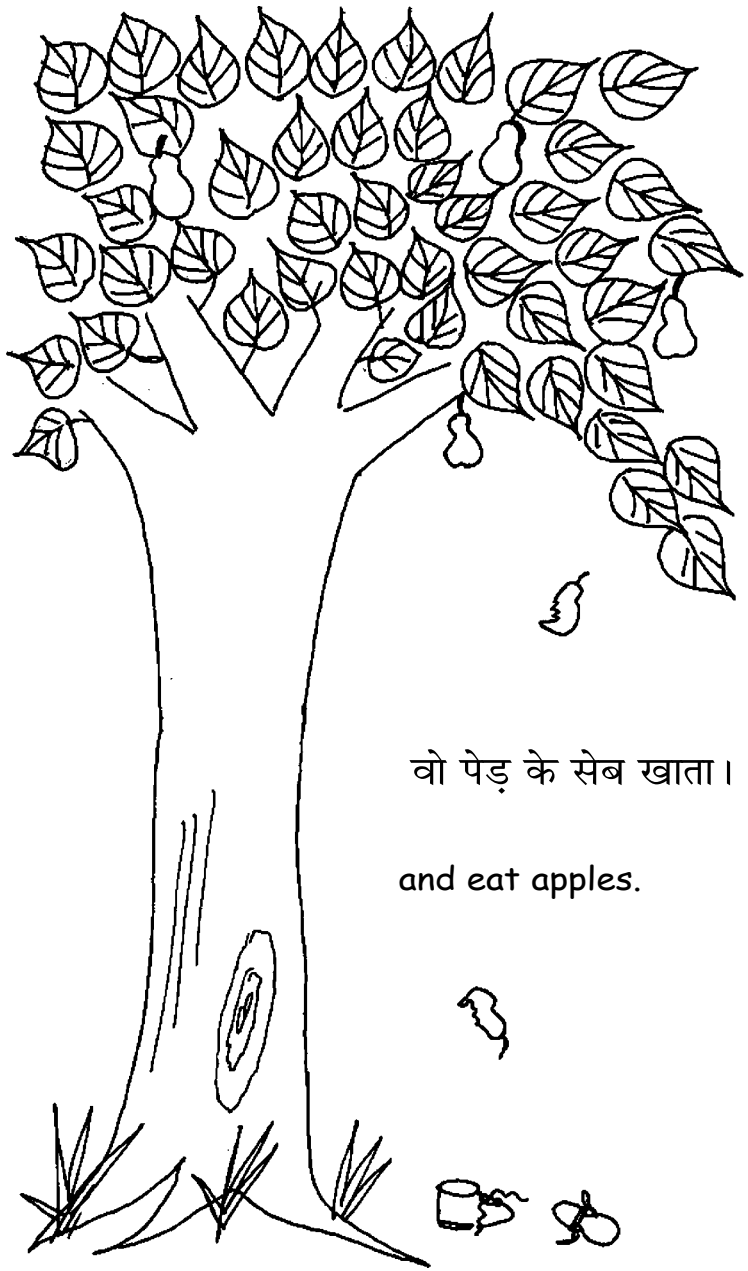

वो पेड़ के सेब खाता।

and eat apples.

फिर पेड़ और लड़का
साथ–साथ लुका–छिपी
खेलते।

And they would play
hide-and-go-seek.

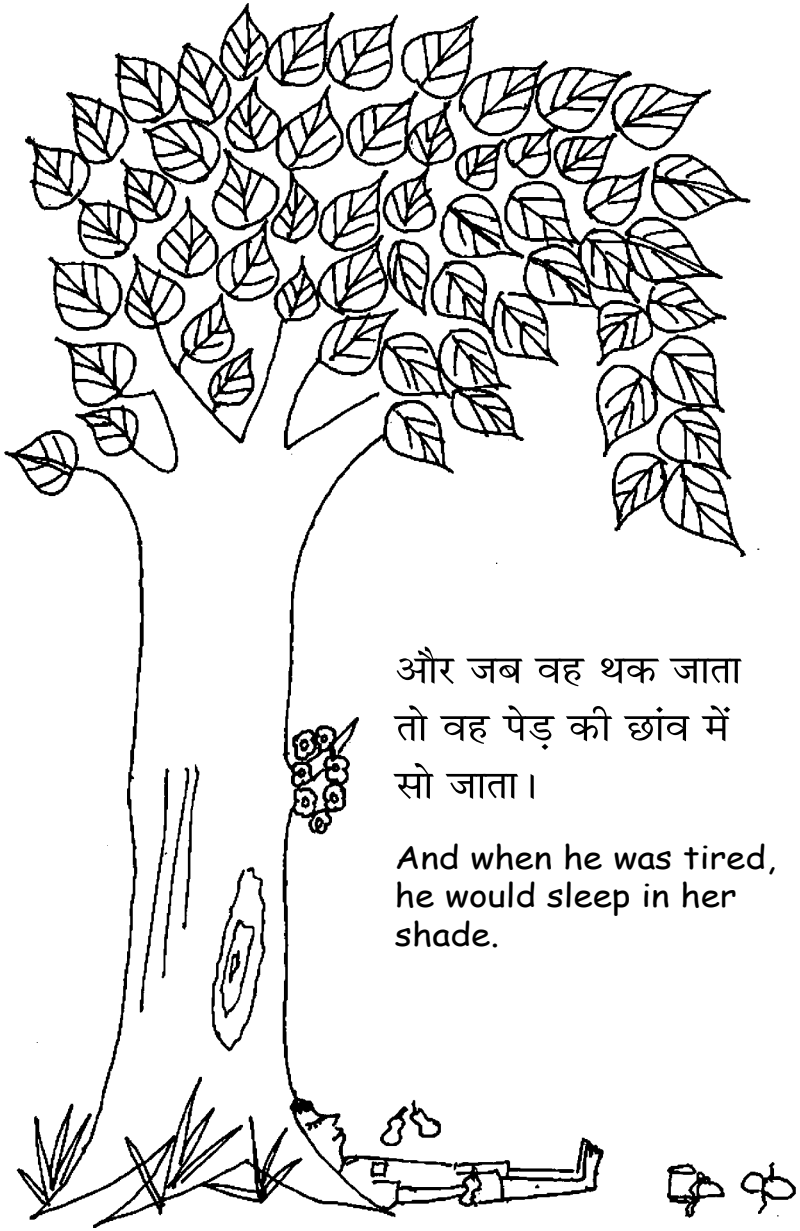

और जब वह थक जाता
तो वह पेड़ की छांव में
सो जाता।

And when he was tired,
he would sleep in her
shade.

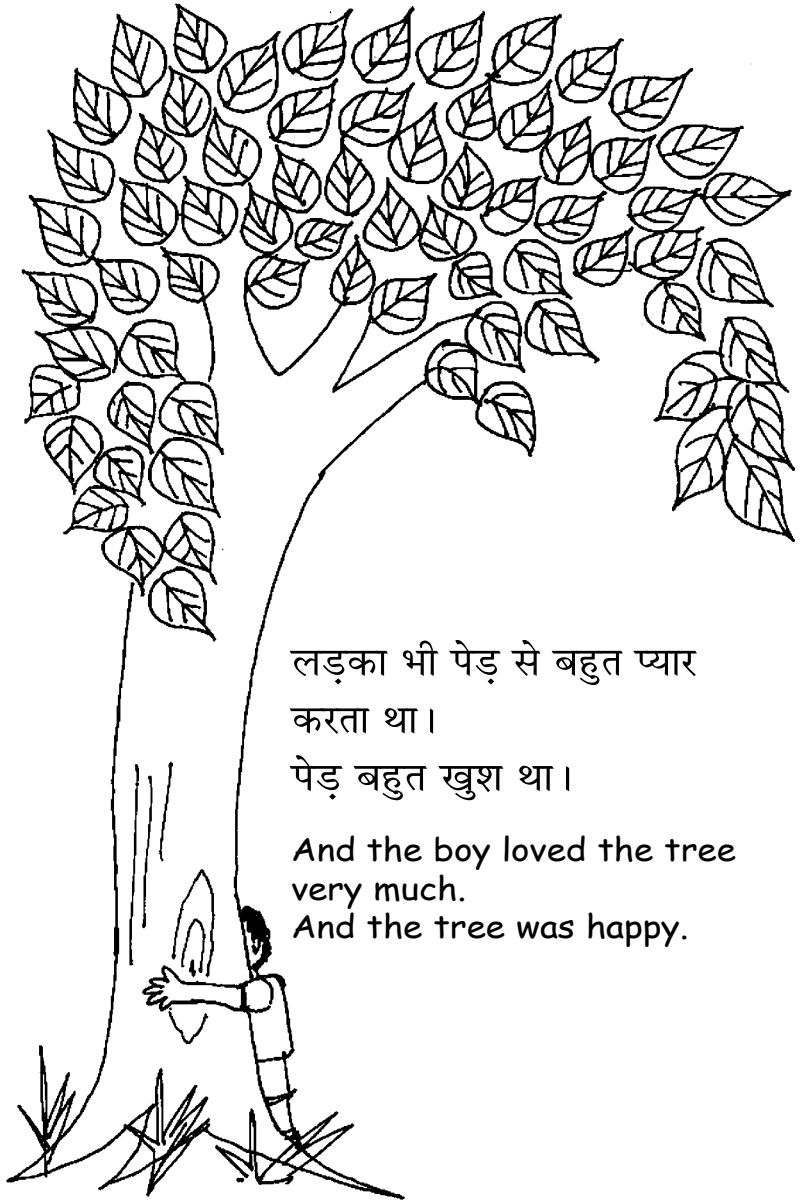

लड़का भी पेड़ से बहुत प्यार
करता था।
पेड़ बहुत खुश था।

And the boy loved the tree
very much.
And the tree was happy.

पर समय बीतता गया।

But time went by.

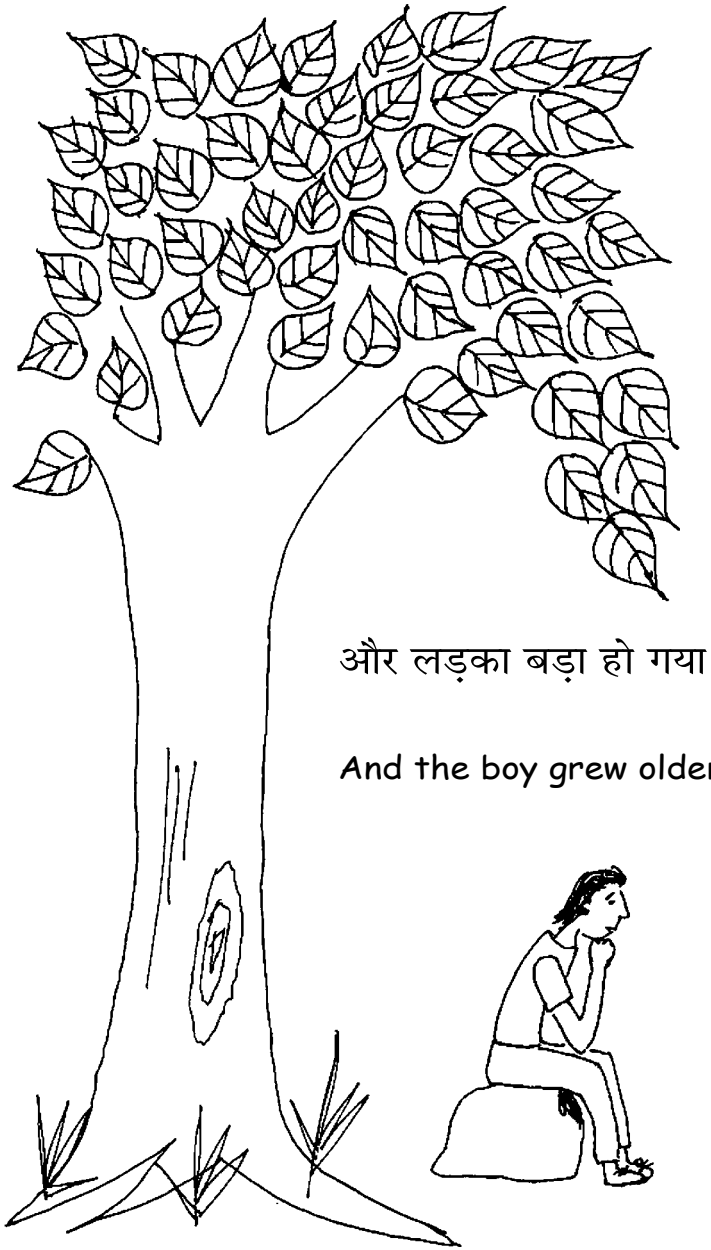

और लड़का बड़ा हो गया।

And the boy grew older.

अब पेड़ अपने आप को
अकेला महसूस करने लगा।

And the tree was
often alone.

एक दिन जब लड़का पेड़ के पास आया तो पेड़ ने कहा ,''बेटा आओ मेरे तने पर चढ़ो और मेरी डालों से झूलो। मेरे फल खाओ और मेरी छांव में खेलो और खुश रहो।''

लड़के ने कहा, ''अब मैं बड़ा हो गया हूं।
अब मेरी उम्र पेड़ पर चढ़ने और खेलने की नहीं रह गई है। मैं अब चीज़ें खरीद कर मज़ा करना चाहता हूँ।
मुझे कुछ पैसे चाहिए। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?''

पेड़ ने कहा, ''पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। मेरे पास केवल पत्ते और सेब हैं। मेरे सेब तोड़ लो और इन्हें शहर में जाकर बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जाएंगे और तुम खुश हो जाओगे।''

Then one day the boy came to the tree
and the tree said, "Come, Boy, come and climb up
my trunk and swing from my branches and eat
apples and play in my shade and be happy."
"I am too big to climb and play," said the boy.
"I want to buy things and have fun.
I want some money?"
"But I have no money.
I have only leaves and apples.
Take my apples, Boy, and sell them in the city.
Then you will have money and you will be happy."

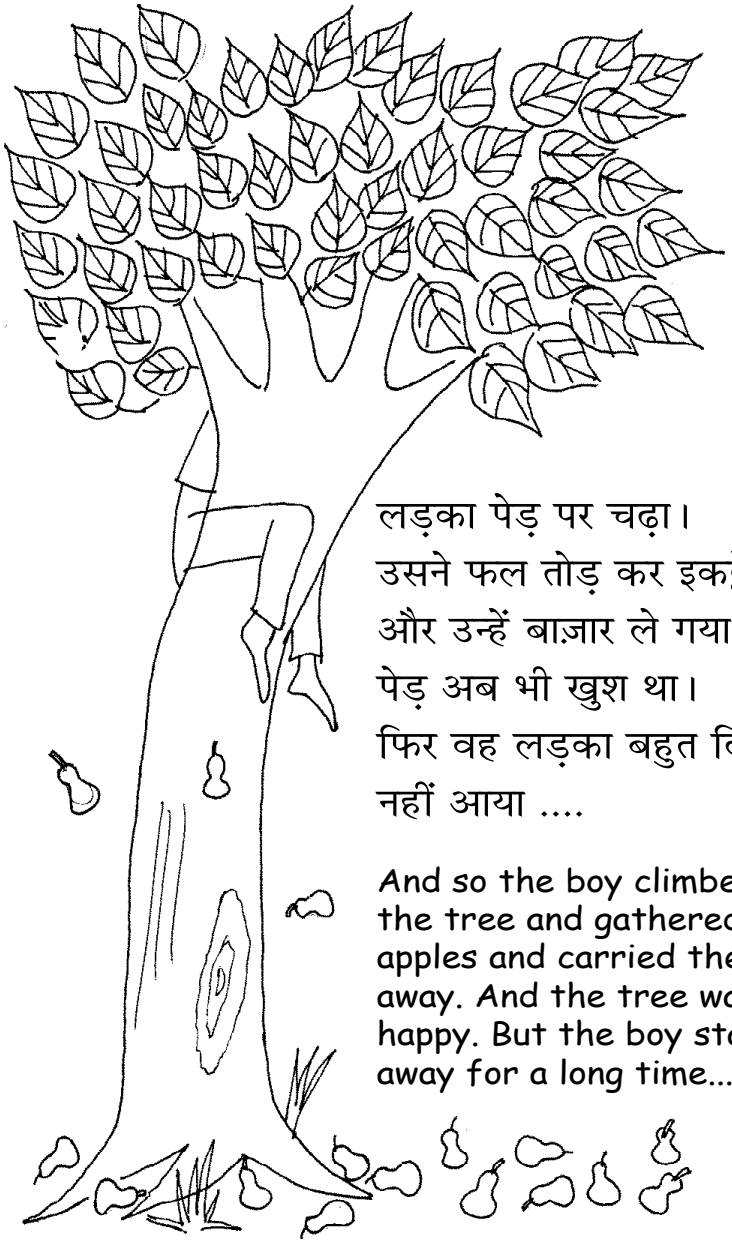

लड़का पेड़ पर चढ़ा।
उसने फल तोड़ कर इकट्ठे किए
और उन्हें बाज़ार ले गया।
पेड़ अब भी खुश था।
फिर वह लड़का बहुत दिनों तक
नहीं आया ....

And so the boy climbed up the tree and gathered her apples and carried them away. And the tree was happy. But the boy stayed away for a long time....

पेड़ दुखी हुआ।
फिर जब एक दिन लड़का वापस आया तो
पेड़ खुशी से हिलने लगा और कहने लगा,
''आओ मेरे तने पर चढ़ो, मेरी डालों से
झूलो और खुश रहो।''
लड़के ने कहा, ''अब मुझे पेड़ों पर चढ़ने
की फुर्सत नहीं है। मुझे एक घर की ज़रूरत
है जिसमें में सुरक्षित रह सकूं। मुझे अब
पत्नी और बच्चों के लिए घर चाहिए।
क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?''
''मेरे पास घर तो नहीं है,'' पेड़ ने कहा,
''यह जंगल ही मेरा घर है। पर तुम चाहो तो
मेरी शाखें काट कर उनसे घर बना लो।
तब तुम खुश होगे।''

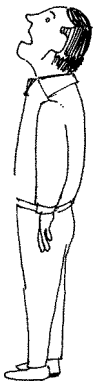

and the tree was sad. And then one day the boy came back and the tree shook with joy and she said, "Come Boy, climb up my trunk and swing from my branches, and be happy."
"I'm too busy to climb trees," said the boy. "I want a house to keep me warm," he said. "I want a wife and I want children and so I need a house. Can you give me a house?"
"But you may cut off my branches and build a house. Then you will be happy."

तब लड़के ने पेड़ की शाखें काटीं और उन्हें ले गया अपना घर बनाने। और पेड़ अब भी खुश था। परंतु लड़का बहुत दिनों तक वापस नहीं आया। और जब वह आया तब पेड़ इतना खुश हुआ कि उससे बोलते ही नहीं बना।

''आओ बेटा'', वह फुसफुसाया, ''आओ और खेलो।''

And so the boy cut off her branches and carried them away to build his house.
And the tree was happy.
But the boy stayed away for a long time.
And when he came back, the tree was so happy she could hardly speak.
"Come, Boy," she whispered,
"come and play."

''मैं बहुत दुखी हूँ और मेरी उम्र अब खेलने की नहीं रह गई है,'' लड़के ने कहा। ''मुझे एक नाव चाहिए जो मुझे सात समुद्र पार ले जाए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?''

''मेरा तना काट कर तुम एक नाव बना लो,'' पेड़ ने कहा।

''तब तुम समुद्र पार कर सकते हो और खुश हो सकते हो।''

"I want a boat that will take me far from here. Can you give me a boat?"
"Cut down my trunk and make a boat," said the tree. "Then you can sail away.... and be happy."

तब लड़के ने पेड़ का तना काटा
और उसकी नाव बनाकर
समुद्र पार गया।
पेड़ अब भी खुश था.....
पर सचमुच में नहीं।

And so the boy cut down
her trunk and made a boat
and sailed away.
And the tree was happy
.... but not really.

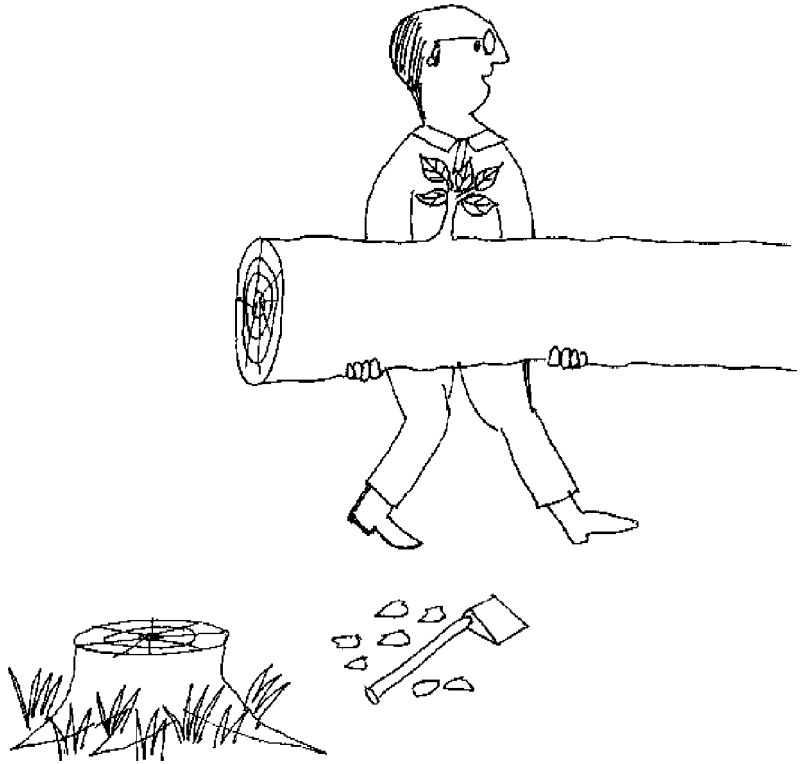

बहुत सालों बाद लड़का फिर वापस आया।
''माफ करना बेटा,'' पेड़ ने कहा, ''अब मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। मेरे सेब नहीं बचे हैं।''
''मेरे दांत इतने कमज़ोर हैं कि मैं उनसे सेब चबा ही नहीं सकता,'' लड़के ने कहा।
''मेरी शाखें भी अब नहीं रहीं,'' पेड़ ने कहा,
''जिन पर तुम झूल सको।''
''मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं और शाखों से झूल नहीं सकता,'' लड़के ने कहा।
''मेरा तना भी नहीं रहा,''
पेड़ ने कहा, ''जिस पर तुम चढ़ सको।''

And after a long time the boy came back again. "
I am sorry, Boy," said the tree, "but I have
nothing left to give you - my apples are gone,"
said the tree.
"My teeth are too weak for apples," said the boy.
"My branches are gone," said the tree.
"You cannot swing on them."
"I am too old to
swing on branches,"
said the boy.

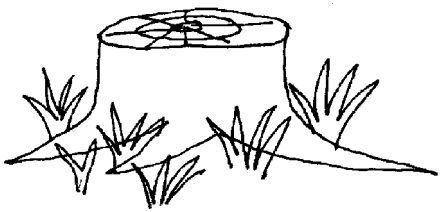

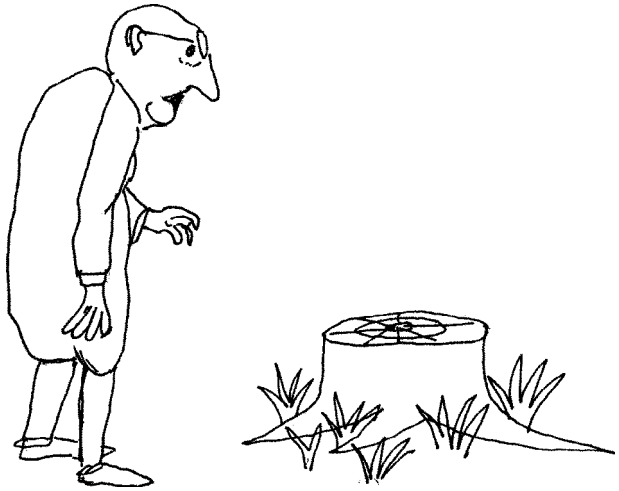

''मैं बहुत थका हूं। तने पर चढ़ने की ताकत मुझमें नहीं है,'' लड़के ने कहा।
''मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था..... परंतु अब मेरे पास कुछ बचा ही नहीं है। मेरे पास सिर्फ एक ठूंठ बचा है। मुझे माफ करना.....''
''मुझे अब ज्यादा कुछ चाहिए भी नहीं,'' लड़के ने कहा, ''सिर्फ एक शांत जगह चाहिए बैठने और सुस्ताने के लिए। मैं बहुत थका हुआ हूं।''
''फिर क्या,'' पेड़ ने अपने आप को सीधा करते हुए कहा, ''आओ बेटा। मेरे ठूंठ पर बैठो और आराम करो।''
और लड़का ठूंठ पर बैठ गया।
पेड़ अब फिर बहुत खुश हुआ।

❐❐❐

"My trunk is gone," said the tree.
"You cannot climb..."
"I am too tired to climb," said the boy.
"I am sorry," sighed the tree.
"I wish I could give you something....
but I have nothing left.
I am just an old stump. I am sorry....."
"I don't need very much now," said the boy,
"just a quiet place to sit and rest.
I am very tired."
"Well," said the tree, straightening herself up as much as she could," well, an old stump is good for sitting and resting.
Come, Boy, sit down. Sit down and rest."
And the boy did.
And the tree was happy.

❐❐❐